पंचम - अध्याय

पंचम अध्याय

उपसंहार

हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में भगवतीचरण वर्माजी बहुमुखी प्रतिभासंपन्न साहित्यकार के रुप में विख्यात थे । उन्होंने साहित्य की विभिन्न विधाओं पर लेखनी चलाकर हिन्दी साहित्य को उपकृत किया है । इसीकारण वह हिन्दी साहित्य में भगवती बाबू का महत्वपूर्ण स्थान रहा है । वस्तुतः भगवतीचरण वर्माजी को सामाजिक उपन्यासकार के रूप में विशेष ख्याती मिली है । उन्होंने अपने उपन्यास साहित्य में नियतिवादी दृष्टिकोण को अपनाया है । किंतु फिर भी परंपरा की लीक से हटकर कुछ नया करके दिखाना यह उनकी अपनी निजी विशेषता रही है । उन्होंने लगभग देढ़ दर्जन उपन्यास लिखकर अपनी विशिष्ट प्रतिभा का परिचय दिया है । प्रस्तुत प्रबन्ध में उनके विवेच्च उपन्यास 'तीन वर्ष', 'आखिरी दाँव', 'अपने खिलौने', 'भूले बिसरे चित्र', 'सामर्थ्य और सीमा' और 'थके पाँव'आदि सामाजिक है । उनमें से यहाँ प्रमुख रूप से तीन उपन्यास 'आखिरी दाँव', 'भूले बिसरे चित्र' और 'सामर्थ्य और सीमा' में चित्रित स्त्री पात्रों का अनुशीलन किया है । इस शोधकार्य के दौरान किए गए अध्ययन से यह बात स्पष्ट रूप से साबीत होती है कि भगवतीचरण वर्माजी के उपन्यासो में चित्रित स्त्री पात्राएँ अपनी विशेष योग्यता रखी हुई पायी जाती है ।

भगवतीचरण वर्माजी के उपन्यासों में विशेष रूप से मानव जीवन संबंधित सामाजिक समस्याओं की अभिव्यंजना व्यक्त हुई है । यथार्थ का अंकन करना और उसका निराकरण करना यही भगवतीचरण वर्मा के उपन्यास साहित्य की विशेषता है । वर्माजी ने अपने सामाजिक उपन्यासों में स्त्री जीवन की शाश्वत समस्याओं को उठाकर अपने मानवतावादी दृष्टीकोण का परिचय दिया है । स्त्री को वैधानिक रूप से समान अधिकार प्राप्त होने के बावजूद भी प्रत्यक्ष व्यवहार में मात्र उनके साथ अनीति का व्यवहार किया जाता है । अतः स्त्री पर होते आ रहे इन अत्याचारों के खिलाप भगवतीचरण वर्माजी ने अपनी कलम चलाकर पर्दाफाश किया है । उन्होंने अपने उपन्यास साहित्य में स्त्री के प्रति सहानुभूति प्रकट करके उन्हें प्रेरणा एवं स्फूर्ति प्रदान करने का प्रयत्न किया है ।

साहित्यकार और उसकी साहित्यिक कृतियों, इन दोनों में भी बहुत गहरा सबन्ध प्रस्थापित

होता है । इसलिए प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध के प्रथम अध्याय में भगवतीचरण वर्माजी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर अध्ययन किया है ।

द्वितीय अध्याय में भगवतीचरण वर्माजी को सामाजिक उपन्यासकार के रूप को स्पष्ट किया है । अतः उनका सामाजिकता के साथ किस प्रकार का सबन्ध था और उनपर तत्कालीन युग में किन किन परिस्थितियों का, व्यक्तियों का तथा सामाजिक संस्थाओं का प्रभाव पड़ा था उस पर प्रकाश डाला है । इसी अध्याय में भगवतीचरण वर्मा के सामाजिक उपन्यासें की कथावस्तु का संक्षेप में परिचय करा दिया है । उनके इन उपन्यासों में प्रायः उच्चवर्गीय, निम्नमध्यवर्गीय एवं निम्नवर्गीय स्त्री-जीवन की शाश्वत समस्याएं चित्रित है । 'थके पाँव' की माया की समस्या है कि उसके व्यक्तिगत विकास के लिए संयुक्त परिवार की आर्थिक स्थिती अडसर पैदा करती है । उसका पिता रामेश्वर निरंतर प्रयत्न करता तो है, किंतु वह अंत तक आर्थिक विपन्नता में सुधार नहीं ला सकता है । अतः अपने विवाह का प्रस्ताव अनमेल तो है ही फिर भी उसके लिए दहेज भी देनी है यह जानकर माया घर छोड कर फिल्म एक्टर बनने के हेतु बंबई चली जाती है । वहाँ जाकर वह अपने परिवार के लिए कुछ न कुछ मदद करती है । 'भूले बिसरे चित्र' की विद्या निम्नमध्यमवर्गीय परिवार की आधुनिक विचार प्रवृत्ति की क्रांतिकारी युवती है । उसका पित गंगाप्रसाद डिप्टी कलक्टर होते हुए भी अपने स्वाभिमान तथा देशनिष्ठा के कारण वह अवैध मार्ग से धन इकट्ठा नहीं कर पाता है । अतः उसकी विवाह योग्य लडकी विद्या के विवाह के लिए मरणोपरांत तक पूँजी इकटठा नहीं कर पाता है । किंतु बाद में उसका भाई नवल उसका विवाह अर्थलिप्सा वृत्ति के परिवार में कर देता है । वहाँ विद्या उसके ससूर के खिलाप विद्रोह करके भारतीय समाज के खोखले पन का भांडा फोड देती है । इससे भगवतीचरण वर्माजी ने यह स्पष्ट कर दिया है कि आज स्त्री बहुत जागृत हो रही है वह अपने पर आए हुए संकटों का सामना करने के लिए कुछ भी करने के लिए हिचकिचाती नहीं है ।

'तीन वर्ष' की सरोज एक वेश्या है, किंतु प्रभा से अपमानीत होकर हारे हुए रमेश को फिर से मानवीय गुणों से युक्त बनाने का प्रयत्न करती है । यह करते समय वह खुद धोखा स्वीकारती है, किंतु अंत तक वह अपने कर्तव्य पर अडिग रहती है । रमेश के विरह में उसके प्राण भी निकल

जाता है, फिर भी वह अपना सर्वस्य उसे ही अर्पित कर देती है । वर्माजी ने 'तीन वर्ष' की प्रभा एवं सरोज इन दो स्त्री पात्रों के दो परस्पर विरोधी तत्वों को उभारकर एक ओर अमानवीय तो दूसरी ओर मानवीय कृत्यों को साकार ने का सफल प्रयास किया है ।

भगवतीचरण वर्माजी ने अपने उपन्यासों के माध्यम से वर्तमान, भुत एवं भविष्यत काल के समाज में स्त्री की यथार्थ स्थिति को अंकित करने का प्रयत्न किया है । उनके उपन्यासों से यह ज्ञात होता है कि स्त्री को सामर्थ्यशाली एवं बलवान बनाने के उद्देध्य से ही उन्होंने अपने उपन्यासों में स्त्री पात्रों को विशेष स्थान दे रखा है । आज के युग में स्त्री पुरुष के समानाधिकार की बातें चल रही है, किंतु स्त्री को उचित स्थान मिल नहीं पा रहा है । यही त्रिकालबाधित सत्य उन्हें हमेशा खटकता रहा । अतः उन्होंने अपने उपन्यासों के माध्यम से स्त्री-पुरूष समानता तत्व को प्रधानता देकर स्त्री का उद्धार करने का प्रयास किया है । उसका सुंदर उदाहरण है 'सामर्थ्य और सीमा' की रानी मानकुमारी, वह अपने प्रतिभाशाली व्यक्तिमत्व से विधवा होते हुए भी राजनितिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक इन तीनों क्षेत्र में अपना जम बसाने का प्रयत्न करती है ।

तृतीय अध्याय में भगवतीचरण वर्माजी के प्रमुख सामाजिक विवेच्च्य उपन्यास 'आखिरी दाँव', 'भूले बिसरे चित्र' तथा 'सामर्थ्य और सीमा' में चित्रित स्त्री पात्रों को ढूँढ निकालने का प्रयास किया है । दस्तुतः उनके प्रत्येक उपन्यासों में स्त्री पात्र संख्या में बहुत है । अतः समय की पाबंदी को ध्यान में रखते हुए उन स्त्री पात्रों को सामान्य रूप से (अ) प्रमुख स्त्री पात्र एवं (ब) गौण स्त्री पात्र इन दो भागों में विभक्त किया है । इसके साथ ही साथ भगवतीचरण वर्माजी का स्त्री के प्रति जो उदारवादी दृष्टिकोण रहा है उसकी ओर भी संकेत किया है ।

चतुर्थ अध्याय में प्रमुख विवेच्य उपन्यासों के स्त्री पात्रों का चरित्र चित्रण किया है । उन स्त्री पात्रों की चारित्रिक विशेषताओं का विस्तार से अनुशीलन करने से यह स्पष्ट हुआ है कि प्रत्येक स्त्री पात्रों की समस्या अलग अलग होने के कारण उनके चारित्रिक वैशिष्टय भी अलग अलग रूप से उभर कर आये है । जिससे प्रत्येक स्त्री पात्र का चाहे वह प्रधान हो या गौण इन सब का पाठकों के मानस पर विशेष प्रभाव पडते बीना रहा नहीं है ।

विवेच्य उपन्यासों में कई पात्र विवाहित हैं, विधवाएं है, पतिपरित्यक्ता हैं, तो कई अविवाहित युवतियाँ है । इन प्रत्येक स्त्री पात्र में बौद्धिक कौशल प्रचुर मात्रा में होने के कारण उनमें स्त्री जाति पर परंपरांगत रूप से होते आये अन्यायों के खिलाप जूसने की प्रवृत्ति है । उन्होंने अन्याय के खिलाप किया हुआ विद्रोही स्वर अनायास ही उभर नहीं पाया है, वह उनके वैचारिकता की प्रतिछवि है । विधवा स्त्री पात्र समझदार एवं सहनशील प्रवृत्ति के होने के कारण वह प्रत्येक कार्य में समझौता करती हुई पाई जाती हैं । विवाहित स्त्री पात्र भारतीय संस्कृति की जकड में अपने आपको बाँधकर अपना धर्म निभाने का प्रयत्न करती है । अविवाहित युवतियों में सामाजिक कुप्रथाओं के कारण विद्रोही भावना दिखाई देती है । जिससे इनके मन में हमेशा क्रांतिकारीभाव जागृत होते हुए नजर आते हैं । कुछ स्त्री पात्र वेश्या भी है । वस्तुतः इन वेश्या का कोई दोष होने के बावजूद भी समाजद्वारा उनको हीन लेखा जाता है । ये वेश्याएँ मजबूर होने के कारण अन्याय के खिलाप आवाज उठाने का साहस नहीं कर पाती है । इसीलिए वेश्याएँ अपने उसी व्यवसाय में व्यस्त रहने का प्रयास करती है । स्पष्ट है कि प्रत्येक स्त्री पात्र प्राचीन भारतीय संस्कृति की जकड में इस तरह से बाँधी है कि उनको उससे छुटकारा पाना भी असंभवसा हो बैठा है । प्रत्येक पुरूष पात्र का स्त्री की ओर देखने की दृष्टिकोण भोग्य वस्तु का सा ही है । कुछ स्त्री को वैधव्य प्राप्त हुआ है, कुछ को स्त्री पात्रों का आर्थिक विपन्नता के कारण विवाह नही हुआ है, तो कुछ स्त्री पात्रों को मजबूरन वेश्या का व्यवसाय करना पडा है । अतः उनका मानसिक संतुलन ठीक न होने के कारण वे स्त्री पात्राएँ पुरूष जाति के खिलाप विद्रोह प्रकट करती रहती है । 'भूले बिसरे चित्र' की विद्या ससूर की धनलिप्सा से त्रस्त होकर खुद ही अपने वैवाहिक सबन्ध तोड देती है, तो जाति भेद के दंगो के कारण उल्लन में पडी हुई मलका उर्फ माया शर्मा अपना धर्म ही बदल देती है । थके पाँव की माया अनमेल विवाह एवं आर्थिक अभावों के कारण विवाह करना ही पसंत नहीं करती है । स्पष्ट है कि सामाजिक गठबंधन ठीक सा न होने के कारण कुछ स्त्री पात्रों ने स्वतंत्रता प्रवृत्ति को अपनाया हुआ दिखाई देता है । 'आखिरी दाँव' की चमेली पारिवारिक वातावरण में तनाव पैदा होने के कारण स्वतंत्र निर्णय लेकर अपने वैवाहिक जीवन को ठुकरा कर बाद में रामेश्वर जैसे अधेड उम्र के जुआरी के साथ समझोता कर लेती है ।

कुछ स्त्री पात्रों के पति दूसरी स्त्री के साथ अवैध सबन्ध प्रस्थापित करते है, और अपना पौरूषत्व जागृत होने का भास निर्माण करते है किंतु वे उनकी धर्म पत्नी के मानसिक व्यथा के बारे में वे कुछ सोचते नहीं है । फिर भी ये सभी स्त्री पात्र मौन रहकर पारिवारिक वातावरण में कलह पैदा होने नहीं देती । 'भूले बिसरे चित्र' की यमुना एंव रूक्मिनी अपने पति के पर स्त्री के सबन्धो को जानते हुए भी अपनी पतिभक्ति का धर्म छोडती नहीं है । वे सभी स्त्री पात्र अपने चरित्र को हमेशा पवित्र बनाए रखती है । उनके इसी प्रकार के अचरण से भारतीय संस्कृति का उल्लंघन नहीं हुआ है । स्पष्ट है कि भगवतीचरण वर्माजी पर भारतीय संस्कृति की बहुत गहरी छाप पडी थी । इसी कारण उन्होंने अपने उपन्यासों के स्त्री पात्रों के द्वारा भारतीय संस्कृति की रक्षा करने का प्रयास किया है ।

समाज में वेश्या स्त्री की ओर देखने का दृष्टिकोन अत्यंत हीन होता है वस्तुतः वेश्या स्वयं निर्दोष होती है और उनका नैतिक अचरण भी साफ सुधरा होता है, किंतु समाज की नजरें उन्हें कलंकित एवं अपवित्र घोषित करती है । अतः मानसिक मनोधैर्य दुर्बल होने के कारण वे वेश्याएँ अपने अंदर एक प्रकार की अजिबसी घूटन महसूस करती रहती हैं, कि समाज में वेश्याओं के लिए क्या स्थान है ? अतः ये वेश्याएँ अपने-आप ही उस उत्तर की खोज करती हुई पायाजाती है, क्योंकि समाज उनके लिए कुछ नहीं करेगा यह बात वें अच्छी तरह जानती हैं ।

'तीन वर्ष' की सरोज वेश्या है, किंतु उसके पास दिल है, उसके विपरित अपने-आपको सभ्य समझनेवाली प्रभा के पास नहीं है इसी कारण रमेश का मानसिक स्तर बिगड जाता है । बाद में सरोज उसे अपना कर उसे एक नई जिंदगी प्रदान करती है यही सरोज की महानता है ।

भगवतीचरण वर्माजी के स्त्री पात्रों की विशेषता है कि इन स्त्री पात्रों का रिश्ता अत्यंत विशाल है । क्योंकि भगवतीचरण वर्माजी का मन संयुक्त परिवार पद्धति में अधिक रममान हो गया हुआ दिखाई देता है । जिससे कतिपय नाते-रिश्तेदारों को अपने उपन्यासों में प्रकट करने का अवसर उन्हें प्राप्त हुआ है । अतः उनके उपन्यासों के स्त्री पात्र बहु, पुत्री, पत्नी, माता, पोती, दादी माँ आदि आदि रूपों में अवतरित हैं ।

विवेच्य उपन्यास के स्त्री पात्र अपना पारिवारिक जीवन सुखी बनाए रखने की ओर अधिक स्थान देती हैं । इसलिए ये स्त्री पात्र अपने पति के बदचलन अचरण के प्रति कोई कदम उठाती नहीं है या कोई ठोस उपाय ढूँढने का प्रयास भी नहीं करती है । इससे स्पष्ट है कि इन पात्रों को अपने परिवार का विघटन होना कदापि मंजूर नही है ।

भगवतीचरण वर्मा के विवेच्य उपन्यासों के स्त्री पात्र पतिपरायणता का धर्म निभाने का प्रयास करती है और उसमें वे स्त्री पात्र सफलता भी पा युके है । ये स्त्री पात्राएँ अपने पति के कार्य पर संतुष्ट रहना ही अपना परम कर्तव्य समझती है । 'भूले बिसरे चित्र' की यमुना एवं रूक्मिनी ने इसमें काफी सफलता पाई हैं ।

विवेच्य उपन्यास के बहुतांशी स्त्री पात्र आर्थिक स्वतंत्रता पाने का भी प्रयास करती है और उसमें वे सफल भी हो गई है 'थके पाँव' की माया परिवार की आर्थिक विषन्नता देखकर बंबई जाकर पैसा कमाती है और परिवार की मदद करती है । उसी प्रकार 'भूले बिसरे चित्र' की संतो एवं कैलासो अपने पति की अकार्यक्षमता को पहचान कर स्वतंत्र निर्णय लेकर अवैध मार्ग से पैसा कमाती रहती है । उससे स्पष्ट होता है कि भगवतीचरण वर्माजी का स्त्री के प्रति उदारवादी दृष्टिकोण है कि प्रत्येक स्त्री ने स्वयं निर्भर होना चाहिए ताकि कठिन परिस्थिति को वह खुद ही हल कर सके और अपना जीवन बड़े मान-सम्मानके साथ जी सके ।

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध के अध्ययन के प्रारंभ में मेरे मन में जो प्रश्न पैदा हुए थे उनका समाधान करना यहाँ अनिवार्य है ।) भगवतीचरण वर्माजी का समुचा जीवन ही संघर्षमय जीवन की कहानी है । पाँच वर्ष की उम्र में उनके पिताजी की मृत्यु के कारण पारिवारिक जिम्मेदारी उनपर ही पडी थी । फिर भी प्रतिकूल परिस्थिति के सामने उन्होंने कभी हार नहीं मानी । भगवतीचरण वर्माजी की बुद्धि तीव्र एंव प्रतिभासंपन्न तो थी, किंतु आर्थिक परिस्थिति के कारण अध्ययन करते समय उन्हें कतिपय कठिनाइयों का सामना करना पड़ा । यही कारण है कि वे सातवी कक्षा में हिन्दी में फेल हो गए थे । फिर भी संयमी भगवती बाबू टूटना नहीं चाहते थे । अतः उन्होंने अपनी तीव्र बुध्दि का परिचय काव्य प्रतिभा के माध्यम से देना शुरू किया, जिसके कारण वे कतिपय साहित्यिकों

के संपर्क में आ गए । जिससे उनका मन साहित्य की क्षेत्र में रमने लगा । इस प्रकार भगवती बाबू का व्यक्तित्व उभरने तो लगा था किंतु परिवार की समस्या उन्हें छुटकारा नहीं दे पा रही थी । इसी हाल में उन्होंने एम.ए. तक की शिक्षा प्राप्त करने के बाद नौकरी न करके वकालत करना आरंभ किया किंतु उसमें वे सफल नहीं होते है । उनकी पत्नी उमा की बीमारी तथा अन्य पारिवारिक समस्या उनके उभरे हुए नये व्यक्तित्व को साथ दे नहीं पा रही थी । पत्नी उमा की मृत्यु के बाद टूंटे हुए भगवती बाबू ने फिर एक बार वकालत करने का प्रयास किया किंतु उनका साहित्यिक व्यक्तित्व उन्हें इस क्षेत्र में खिच रहा था । इसी समय सन 1934 में लिखा हुआ उपन्यास 'चित्रलेखा' काफी प्रसिद्ध हुआ । 'चित्रलेखा' की सफलता ने उन्हें इस क्षेत्र की ओर और आधिक आकृष्ट किया । सन 1933 में देश में सांप्रदायिक दंगों के कारण राजनीतिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक क्षेत्र में बहुत हलचल होने लगी थी जिसका भगवतीचरण वर्माजी पर बहुत ही गहरा प्रभाव पडा । फिर भी उन्होंने अपने साहित्य का निर्माण करने का अथक प्रयास किया, और मरणोपरांत तक वे साहित्य की सेवा करते रहे ।

इस प्रकार भगवतीचरण वर्माजी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व सामाजिक आर्थिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक परिवेश की गर्तता में जलकर विकसित हुआ था ।

2) भगवतीचरण वर्माजी का व्यक्तिव ही कतिपय सामाजिक समस्याओं के साथ जूझता रहा था । उन्होंने तत्कालीन सामाजिक परिकी लॉबी को अच्छी तरह से नापा था । अतः यह करते समय उन्हें भी कतिपय सामाजिक समस्याओं के साथ जूझना पडा था । उस समय राजनीतिक क्षेत्र की हलचले स्वतंत्रता प्राप्ति के हेतु सिसकियाँ ले रही थी । साथ ही साथ समाज में कुप्रथाओं का प्रचलन ज़ोर पकड रहा था, तो आर्थिक स्थिति खोखली बनती जा रही थी । उन सब का बोध भगवतीचरण बाबूजी ने अनुभव से आत्मसात किया था । अतः उन्होंने अपने उपन्यासों में वेश्या समस्या, दहेज प्रथा, अनमेल विवाह समस्या, संयुक्त परिवार की समस्या, अछूत समस्या, आर्थिक, सांस्कृति, राजनितिक आदि समस्याओं को चित्रित किया है । ये सभी समस्याएँ सामाजिक होने के कारण भगवतीचरण वर्माजी ने उनको ही अपने उपन्यासों का विषय बनाकर कल्याणकारी व्यक्तित्वों का निर्माण करने का प्रयास किया है । उनके व्यक्तित्व का सामाजिक समस्याओं के साथ ज्यादह मात्रा में लगाव होने के कारण ही भगवतीचरण वर्माजी एक सफल सामाजिक उपन्यासकार होने का बोध होता है ।

3) प्रस्तुत स्त्री पात्रों की व्याप्ति के बारे में यह बात कहना जरूरी है कि अधिकतर स्त्री पात्र भारतीय है । लेकिन फिर भी कुछ स्त्री पात्र परराष्ट्रीय भी है । जैसे, 'सामर्थ्य और सीमा' की रानी मानकुमारी नेपाल और भारत के रक्त का मिश्रित रूप है । तो इसी उपन्यास की वालिया पोलिश युवती है । अतः इस बारे में यह स्पष्टीकरण दिया जा सकता है कि भगवतीचरण वर्माजी ने स्त्री पात्रों की व्याप्ति आंतरराष्ट्रीय सीमा तक फैलायी है ।

4) प्रस्तुत स्त्री पात्रों में से वेश्या सरोज, संतो तथा मलका आदि स्त्री वेश्या समस्या से सुलझी हुई है । मलका उर्फ माया शर्मा विवाह-पूर्व जीवन में अवैध सबन्ध रखती है, किंतु बाद में वह देशप्रेम की भावना से प्रेरित हो जाती है । उसी प्रकार विवाह के उपरान्त वैवाहिक जीवन संपुष्टित होने के बाद विद्या भी अपना समूचा जीवन देशसेवा के लिए अर्पित कर देती है । 'आखिरी दाँव' की चमेली का भी प्रारंभ में वैवाहिक जीवन कलह पूर्ण है, अतः वह दुखी होकर अपने को मुक्ति पाने के हेतु बंबई में भाग जाती है और वहाँ रामेश्वर के साथ प्रेम करके अपनी समस्या को हल करती है । जैदेई एवं रानी मानकुमारी ये दोनों सुसंपन्न परिवार की विधवाएँ है, जो खुद की रक्षा करवाने के हेतु अन्य पुरूष का सहारा पाती है और उनके साथ एकनिष्ठ रहने का प्रयत्न करती है । उन दोनो में से रानी मानकुमारी मात्र दुर्भाग्यशाली स्त्री पात्र है, जो अंत तक अपने आंतरिक मानसिक द्वंद्व का सामना करती है । उषा नवल के साथ प्रेम करने में असफल हुई है मात्र विवेच्य उपन्यासों के अन्य सभी स्त्री पात्र अपनीसमस्याओं को आसानी से सुलझा सकी हैं ।

चमेली महान त्याग का आदर्श स्त्री पात्र है । राधा में स्वार्थ की भावना प्रचुर मात्रा में है जैदेई और रानी मानकुमारी ये दोनों स्त्री पात्र बौध्दिकता से परिपक्व है । यमुना एवं रूक्मिनी आदर्श भारतीय गृहिणी की भूमिका निभाने में सफल रही हैं । विद्या तथा माया शर्मा ये दोनों भी स्त्री पात्र सामाजिक एवं राजनीतिक समस्याओं को अपने जीवन में महत्वपूर्ण स्थान देती है और उन्हें सुलझाने का समाधान करती रहती है ।

विवेच्य उपन्यासों के स्त्री पात्रों के अध्ययन से यह स्पष्ट हो जाता है कि, इनमें सूक्ष्म एवं स्थूल रूप से विकास देखने को मिलता है । जैदेई तथा रानी मानकुमारी में प्राचीन भारतीय

संस्कृति के प्रति आस्था है, जिसके कारण वे दोनों भी विधवा होते हुए भी अपनी पूरातन विचारधारा में परिवर्तन होने नही देती । उन दोनों में भी परिस्थिति के साथ समझौता कर लेने की प्रवृत्ति ज्यादह मात्रा में है ।

भगवतीचरण वर्मा के सभी स्त्री पात्र अपनी जिंदगी के प्रति अनुराग की भावना रखकर जीवित रहने की कोशिश करती हुई नजर आती है । चमेली अपनी जिंदगी सुखमय बनाने के सपने सजाते हुए रामेश्वर को अपना बना लेती है । तो उषा प्रेम में असफल होते हुए भी अपने प्रेमी नवल के प्रति अनुराग की भावना रखती है ।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि भगवतीचरण वर्माजी ने स्त्री पात्रों को हमेशा जागृत रहने का स्वांत सुखाय संदेश ही दिया है । जिससे उनका समूचा जीवन प्रफुल्लित बन जाय ।